International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 12, Dec- 2021
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

पुराणों में ज्योतिष शास्त्र

डॉ. प्रमोद कुमार वैष्णव
आचार्य संस्कृत
हरिदेव जोशी राजकीय कन्या महाविद्यालय बांसवाड़ा

प्रायः कहा जाता है कि वेदों में तो विज्ञान है किन्तु पुराण कपोल कल्पित मिथक हैं। पुराणों में विज्ञान नहीं है। ऐसा लगता है कि हमारे विद्वान पंडितों ने कथाओं के अतिरिक्त इनकी विषय वस्तुओं के बारे में समाज को बताया ही नहीं।

अग्नि पुराण, श्रीमद्भागवत महापुराण, नारद पुराण स्कन्द पुराण पद्मपुराण ही नहीं अपितु गरुड़ पुराण में कथाओं के अतिरिक्त सामाजिक विज्ञान, राजनीति विज्ञान,मंत्रविज्ञान भाषाविज्ञान,संगीत,आयुर्वेद, गवायुर्वेद, विष चिकित्सा, तंत्र विज्ञान के अतिरिक्त ज्योतिष विज्ञान का भी प्रचुर उल्लेख है।

पद्मपुराण में युगों की अवधि का उल्लेख निम्न प्रकार हैः–

सतयुग संध्या एवं सध्यांश के साथ 4800 (4000+800), त्रेतायुग 3600(3000+600), द्वापरयुग 2400(2000+400) व कलयुग 1200(1000+200) दिव्य वर्ष बताई गई है।ब्रह्मा की उम्र के एक दिन की अवधि एक हजार चतुर्युग व इतनी ही रात्रि के साथ 100 वर्ष मानी गई है।

अग्नि पुराण के अनुसार शिशुमार चक्र के पुच्छ भाग में ध्रुव की स्थिति है तथा यह ध्रुव स्वयं घूमता हुआ चन्द्रमा सूर्य आदि ग्रहों को घुमाता है। अग्नि पुराण के एक सौ इक्कीस वें अध्याय से एक सौ चौवालीसवें अध्याय तक ज्योतिष विज्ञान का उल्लेख है। जिसमें वर वधू के गुण मिलाप, संस्कारों के काल का विचार,ग्रहण, संक्रांति व महादशा का उल्लेख 121 वें अध्याय में है। 122 वें में कालगणना,123 वें में युद्धजयार्णव संबंधी योग,126 वें में न संबंधी पिण्ड का वर्णन है,यथा कुंभ चक्र, सर्पाकार राहू चक्र,अर्धयामेश,नक्षत्रों की संज्ञा व उसके प्रयोजन का विवरण है। 127वें अध्याय विभिन्न ग्रह बलों का विवरण हैः यथा जन्म राशि या लग्न से दूसरे स्थान पर सूर्य,शनि,राहू,अथवा मंगल प्राप्त द्रव्य का नाश करते हैं। जन्म राशि के चन्द्रमा अथवा शुक्र वर्जित होने पर भी शुभफल देते हैं। चन्द्रमा,बुध, गुरु और शुक्र दूसरे स्थान पर शुभ फल देते हैं। तीसरे स्थान पर चन्द्रमा, सूर्य,शनि,मंगल शुक्र,बुधव राहू शुभदायक होते हैं। चौथे भाव में बुध और शुक्र शुभदायी है,शेष सभी ग्रह भयदायक है। पांचवें भाव में वृहस्पति, शुक्र,बुध,व चन्द्रमा शुभदायक व अभीष्ट फल देते हैं। छठे भाव में अपनी राशि में सूर्य, चन्द्र,शनि,मंगल,व बुध, शुभदायी होत हैं।लेकिन शुक्र व गुरु शुभ नहीं होते। सप्तम भाव में सूर्य,शनि, मंगल व राहू हानिकारक होते हैं। बुध, गुरु व शुक्र लाभ दायक होते हैं। अष्टम भाव में बुध व शुक्र के अतिरिक्त सब ग्रह अनिष्ट कारक होते हैं।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 12, Dec- 2021
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

नवम भाव में भी बुध व शुक्र के अतिरिक्त कोई अन्य ग्रह शुभदायक नहीं होते।दशम् भाव में सूर्य व शुक्र लाभ दायक होते हैं। ग्यारहवें भाव में सभी ग्रह शुभ फलदाई होते हैं, परन्तु दसवें वृहस्पति त्याज्य कहे गए हैं। द्वादश भाव में बुध व शुक्र के अतिरिक्त सभी ग्रह अशुभ फल देते हैं।

अग्नि पुराण के 131वें अध्याय में घात चक्र आदि का वर्णन है।136 वें अध्याय में नक्षत्रों के त्रिनाड़ी चक्र का वर्णन है 139वें अध्याय में साठ संवत्सर व उनके फल भेद का कथन है।243 वें अध्याय में पुरुष लक्षण व 244 वें अध्याय में स्त्री के लक्षण वर्णित हैं।

इन सबके अतिरिक्त अग्नि पुराण में रत्न परीक्षण,पूजा,स्थापना व विभिन्न कार्यसिद्धि हेतु मंत्रों आदि का भी विवरण है जो ज्योतिष कार्य से परोक्ष रूप से जुड़े हुए हैं।

नारद पुराण में संस्कारों के नियत काल, विवाह योग्य कन्या के भेद,सृष्टि तत्व का वर्णन है।त्रिस्कन्ध ज्योतिष के अन्तर्गत गणित विषय का प्रतिपादन, जातक स्कन्ध व संहिता प्रकरण आदि विषयों का वर्णन द्वितीय पाद में किया गया है। विवाह संस्कार संबंधित गुण मिलान वास्तु आदि विषयों को भी इसमें समाहित किया गया है। त्रिस्कन्ध ज्योतिष लगभग 130 पृष्ठों की नारद पुराण में समाहित है।

श्रीमद्भगवद् पंचम स्कंध वें अध्याय के अनुसार सूर्य देव का वेदमय रथ एक मुहुर्त (48 मिनट) में चोंतीसलाख आठ सो योजन अर्थात् 40809600 किमी की गति (850200 किमी प्रति मिनट) से चलते हुए चारों पुरी (देवधानी,संगमनी,निम्लोचनी और विभावरी) में घूमता रहता है। यद्यपि सूर्य देव मेरू को बांयी ओर रखकर चलते हैं पर ज्योतिर्मण्डल को घुमाने वाली निरन्तर दांयी ओर बहने वाले प्रवाह वायु द्वारा घुमा दिए जाने से वे उसे दांयी ओर रखकर चलते हुए से जान पड़ते हैं।

श्रीमद्भगवद् पुराण के अनुसार यह समस्त भूगोल पचास करोड़ योजन का है। इसका चोथाई भाग अर्थात् साढे बारह करोड योजन का लोकालोक पर्वत है।

स्वर्ग और पृथ्वी के मध्य में जो ब्रह्मांड का केन्द्र है वहीं सूर्य की स्थिति है। सूर्य और ब्रह्मांड के मध्य सब ओर से पच्चीस करोड़ योजन का अन्तर है। सूर्य के द्वारा ही दिशा, आकाश, द्यूलोक,भूर्लोक, स्वर्ग और मौक्ष के प्रदेश,नरक और रसातल तथा अन्य भागों का विभाग होता है। सूर्य ही देवता,तीर्यक, मनुष्य, सरीसृप और लता वृक्षादि समस्त जीव समूहों के आत्मा और नेत्रेन्द्रियों के अधिष्ठाता है।

श्रीमद्भगवद्महापुराण के पंचम अध्याय के एकविंश,द्वाविंश व त्रयोविंश अध्याय में क्रमशः सूर्य रथ की गति, ग्रहों की स्थिति व गति तथा शिशुमार चक्र का वर्णन है। ज्योतिष व अन्तरिक्ष विज्ञान के छात्रों व विद्वानों को इसका अच्छी तरह अध्ययन मनन व शोध करना चाहिए। आज जब नासा के वैज्ञानिक भारतीय

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 12, Dec- 2021
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

वेद शास्त्रों व संहिताओं पर अध्ययन कर रहे हैं, हमें आगे आकर इसमें सक्रिय सहयोग देना चाहिए।

श्रीमद्भगवद् पुराण के पंचम स्कंध के इक्कीसवें अध्याय के अनुसार भुर्लोक के परिमाण के समान ही द्यूलोक का परिणाम होता है। इन दोनों के बीच में अन्तरिक्ष है।यह अन्तरिक्ष दोनों लोकों का सन्धि स्थान है। इसके मध्य भाग में ग्रहों और नक्षत्रों के अधिपति सूर्य अपने ताप और प्रकाश से तीनों लोकों को तपाते और प्रकाशित करते हैं। जब सूर्य मेष व तुला राशि पर आते हैं तो दिन रात लगभग समान अवधि के होते हैं। जब वृष मिथुन कर्क सिंह व कन्या राशि में होते हैं तो प्रति माह रात्रि में एक एक घड़ी (24मिनट) कम होती जाती है व तद्नुसार दिन के समय में वृद्धि होती जाती है। जब वृश्चिक व आगे की कुल पांच राशियों में सूर्य होते हैं तो इसके विपरीत परिवर्तन होता है।

इस प्रकार दक्षिणायन आरम्भ होने तक दिन बढते रहते हैं और उत्तरायण तक रात्रियाँ।।

विद्वान जन मानसोत्तर पर्वत पर सूर्य की परिक्रमा का मार्ग नौ करोड़ इक्यावन लाख योजन का बताते हैं।

स्कंद पुराण के माहेश्वर खण्ड के कुमारिका खण्ड में नव ग्रहों की स्थिति,ऊपर के सात लोकों का वर्णन,वायु के सात स्कंध,सात पाताल, इक्कीस नर्क, ब्रह्माण्डकटाह एवं काल मान आदि का निरूपण किया गया है।

इसमें वर्णित सूर्य चन्द्र आदि की स्थिति वर्तमान विज्ञान से कुछ भिन्न है।

गरूड़ पुराण जिसका पठन प्रायः मृत्यु उपरांत धर्म काण्ड –प्रेतकल्प को सुनाने में ही किया जाताना है। परन्तु गरूड़ पुराण तीन काण्ड है।प्रथम आचार काण्ड द्वितीय धर्म काण्ड –प्रेतकल्प व तृतीय ब्रह्म काण्ड है।

आचार काण्ड के 36,41,42,43, 44,45,46व 47वें अध्याय में क्रमशः पुरूष के लक्षण व स्वभाव,ज्योतिश्चक्र में वर्णित न,उनके देवता,कतिपय शुभाशुभ योगों तथा मुहुर्तों का वर्णन, ग्रहदशा,यात्रा शकुन,छींक का फल,सूर्यचक्र आदि का निरूपण, ग्रहों के शुभ अशुभ स्थान व उनके शुभ अशुभ फल का संक्षेप विवेचन है।लग्नफल, राशियों के चर–स्थिर आदि भेद,ग्रहों का स्वभाव,सात वारों में किए जाने वाले कार्य, सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार स्त्री पुरुष के लक्षण, मस्तिष्क व हस्त रेखा से आयु का परिज्ञान,स्त्रियों के शुभाशुभ लक्षण,स्त्री–पुरुष के शुभाशुभ लक्षण तथा साठ संवत्सरों के नाम प्रभाव व स्वरोदय विज्ञान का विवरण दिया गया है।

गरूड़ पुराण में महादशाओं का काल पाराशर आदि से भिन्न है। जो निम्नानुसार हैः–

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 12, Dec- 2021
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

ग्रह दशा	पाराशर आदि	गरूड़ पुराण
सूर्य	6 वर्ष	6 वर्ष
चन्द्रमा	10 वर्ष	15वर्ष
मंगल	7 वर्ष	8 वर्ष
बुध	17वर्ष	17वर्ष
शनि	19वर्ष	10वर्ष
वृहस्पति	16वर्ष	19वर्ष
राहू	18वर्ष	12वर्ष
शुक्र	20वर्ष	21वर्ष
केतु	7 वर्ष	0 वर्ष
कुल	120 वर्ष	108 वर्ष

महादशा क्रम गरुड़ पुराण के आधार पर है।

पाराशर आदि का क्रम निम्न है। सुर्य, चन्द्रमा,मंगल,राहू,वृहस्पति,शनि,बुध,केतु व शुक्र।

विद्वत परिषद इनकी विवेचना आधुनिक विज्ञान व परम्परागत ज्ञान के परिप्रेक्ष्य में करें

अंग्रेजी सौर मास के अतिरिक्त हमारे वैदिक सौर मासों का भी ग्रन्थों में उल्लेख है जिन्हें हम भुला चुके हैं।

उनके नाम क्रमशः निम्न हैः–

मधु,माधव,शुक्र, शुचि, नभ, नभस्य, इष, उर्ज, सह, सहस्य, तप और तपस्य।।

संक्षेप में हम कह सकते हैं की पुराण–ग्रंथ ज्योतिषशास्त्र का अद्भुत खजाना है जिसमें काल गणना से लेकर मनुष्य की ग्रह–नक्षत्र स्थितियों का वृहद वर्णन किया गया है।हमें इन्हें हमारे पंचांगों में समाहित कर सनातन को एक नई जागृति की ओर ले जाने का प्रयास करना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. अग्नि पुराण
2. श्रीमद्भागवत महापुराण

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 12, Dec- 2021
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

3. नारद पुराण
4. स्कन्द पुराण
5. भविष्य पुराण
6. गरुड़ पुराण
7. ब्रह्म पुराण
8. ब्रह्माण्ड पुराण
9. पद्म पुराण
10. लिंग पुराण
11. कुर्म पुराण
12. मत्स्य पुराण
13. मार्कण्डेय पुराण
14. भागवत् पुराण
15. ब्रह्मवेवर्त पुराण
16. वामन पुराण
17. विष्णु पुराण
18. शिव पुराण
19. वैदिक साहित्य का इतिहास
20. भृगुसंहिता
21. सारावली
22. बृहत् पराशर होरा शास्त्र
23. बृहज्जातकम्
24. बृहत्संहिता
25. पंचसिद्धान्तिका